Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 12 | SPECIAL ISSUE DECEMBER-2024

बहुविषयक शिक्षा और संस्थागत सक्षमता एक: भविष्योन्मुखी दृष्टिकोण

डॉ. सरला शुक्ला | एसो. प्रो. भूगोल, साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या.

ABSTRACT:

-

KEYWORDS:

-

प्रस्तावना

जीवन में शिक्षा के महत्व को देखते हुए वर्तमान सरकार ने शिक्षा क्षेत्र में व्यापक बदलावों के लिए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को मंजूरी दी। माना गया कि यह शिक्षा नीति क्षेत्र में नवीन और सर्वांगीण परिवर्तनों की आधारशिला रखेंगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा की गुणवत्ता, वहनीयता और उत्तरदायित्व जैसे मुद्दों पर विशेष ध्यान दिया गया है। जिसमें प्रारंभिक शिक्षा से संबंधित प्रावधान माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा से संबंधित प्रावधान, उच्च शिक्षा से संबंधित प्रावधान आदि पर विशेष ध्यान दिया गया है। इसी के अंतर्गत राज्य सरकारों द्वारा वर्ष 2025 तक प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा-3 तक के सभी बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान प्राप्त करने हेतु इस मिशन की कार्ययोजना तैयार की जा रही है। किन्तु जितनी तेजी से प्राथमिक विद्यालय खोले जा रहे है। उतने ही तेजी से स्कूल न जाने वाले बच्चों की संख्या में तेजी से गिरावट आ रही है। जो वैश्विक शिक्षा प्रणाली की सबसे बड़ी चुनौती बन गयी है। जिसे विश्व बैंक के अनुसार 'सीखने का संकट' कहा जाता है। यह संकट सबसे बड़ा 'भारत' में है। जिसकी शिक्षा व्यवस्था दुनिया में सबसे बड़ी है। 6 से 14 वर्ष की आयु के **95%** से अधिक बच्चे स्कूल जाते है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में कक्षा 5 के लगभग आधे छात्र कक्षा-2 के स्तर पर पढ़ ही नहीं पाते। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 सार्वभौमिक आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता प्राप्त करने की केन्द्रीयता को मान्यता देती है। भारत इस लक्ष्य में सफल होता है या नहीं अभी यह एक जटिल प्रश्न है। यह मध्यम और निम्न आय वर्ग के देशों के लिए भी सबक होगा। प्रस्तुत शोध पत्र में स्कूली शिक्षा पर एनईपी की चर्चा पर समीक्षा की गयी है, जो इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य को सफलतापूर्वक लागू करने में सहायक हो सकती है।

शासन और शिक्षणशास्त्र:-

भारत ने 1990 के दशक से स्कूली शिक्षा तक पहुँच के मामले में जबरदस्त प्रगति की है। फिर भी कई राष्ट्रीय स्तर पर आंकड़ों से ज्ञात होता है कि, पिछले 15 वर्षों में सीखने का स्तर काफी अधिक स्थिर रहा है। एन ई पी में कहा गया कि शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 प्रारम्भिक शिक्षा में लगभग नामांकन प्राप्त करने में सफल रहा है, हालांकि बच्चों की संख्या स्कूलों में बनाए रखना एक चुनौती बन जा रही है। 2015-16 तक प्राथमिक स्तर पर 99.2% की तुलना में माध्यमिक स्तर पर सकल नामांकन अनुपात 56.2% था।

इसके अलावा यह भी नोट किया गया कि जी ई आर में गिरावट कुछ सामाजिक, आर्थिक रूप से वंचित समूहों के लिए अधिक है।

इसके अतिरिक्त स्कूल छोड़ने का सबसे प्रमुख कारण था, घरेलू गतिविधियों में व्यस्तता (लड़कियों के लिए) और आर्थिक गतिविधियों में व्यस्तता (लड़कों के लिए)

तालिका -1, विभिन्न लिंग और समूहों में स्कूली शिक्षा में जी.ई.आर. (2015-16)

स्तर	पुरूष	महिला
प्राथमिक	97%	100%
उच्च प्राथमिक	88%	97%
माध्यमिक	79%	81%
वरिष्ठ माध्यमिक	56%	56%

स्त्रोत: शैक्षिक सांख्यिकी 2018,

एम एच आर डी, पी आर एस।

तालिका -2, (2015-16 में स्कूल छोड़ने का प्रमुख कारण)

पढ़ाई छोड़ने का कारण	पुरूष	महिला
बच्चों की पढ़ाई में रूचि नहीं	23.8%	15.6%
वित्तीय बाधाएँ	23.7%	15.2%
घरेलू गतिविधियों में शामिल	4.8%	29.7%
आर्थिक गतिविधियों में संलग्न	51.0%	4.9%

(मुरलीधरन सिंह और सुंरदमन-2011) की रिपोर्ट के अनुसार यदि शिक्षकों का वेतन बढ़ा दिया जाय तो इसका छात्रों की सीखने की क्षमता पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता। कुल मिलाकर पब्लिक स्कूलों में प्रशासन और प्रबन्धन में सुधार करना तथा सीखने की कला में सुधार करना शिक्षा की प्रगति में अधिक प्रभावकारी हो सकता है।

पिछले 17 वर्षों में भारत में बच्चों की भाषा और गणित कौशल का वार्षिक मूल्यांकन किया है शिक्षा की इन वार्षिक स्थिति रिपोर्ट (ASER) ने घरेलू और वैश्विक शिक्षा-नीति को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

गणित में ASER आंकलन किया गया, जो संख्या पहचान, घटाव और भाग पर होते है, इसमें कई बच्चे संख्याओं को पहचाने बिना प्राथमिक विद्यालय शुरू करते हैं। कक्षा-1 के 36% बच्चें एकल अंकीय संख्याओं को नहीं पहचान सकते हैं। (ASER-2018)

इसी प्रकार पाँचवी कक्षा के 48% छात्र दो अंकों की संख्या में से एक को घटाकर या तीन अंकों की संख्या में से एक की संख्या में भाग देकर हल नहीं कर सकते हैं। (ASER-2018)

इस पर रिपोर्ट आने से यह ज्ञात हुआ कि, देश में बेहद कम सीखने के स्तर पर लोगों में जागरूकता आयी। (ASER-2014)

जिससे इस बारे में आम सहमति बनी कि अब इसे व्यापक रूप से "सीखने का संकट" माना जाता है।

स्कूल में उपस्थिति को सीखने के परिणामों में बदलने में एक और बड़ी चुनौती हो सकती है। क्योंकि अधिकांश शिक्षक पाठ्यपुस्तकों के शैक्षणिक मानकों और छात्रों के सीखने के स्तर के बीच बेमेल मानक को पहचान नहीं पाते और वे अपना ध्यान पाठ्यपुस्तक को पूरा करने पर केंन्द्रित कर देते है।

स्कूल में नामांकन के तेजी से विस्तार ने विद्यार्थियों को एक औपचारिक शिक्षा प्रणाली में लाकर खड़ा तो कर दिया है, लेकिन वे अक्सर ग्रेड उपर्युक्त पाठचर्या मानकों में पीछे रह जाते हैं।

जो चित्र द्वारा स्पष्ट किया गया है, जिसमें दिल्ली के पब्लिक मिडिल स्कूलों (मुरलीधरन सिंह और गनीमियन-2019) के छात्रों के एक नमूने में गणित में छात्र उपलब्धि के स्तर को प्रस्तुत करता है। इस आंकड़े में तीन बिन्दुओं पर ध्यान केंन्द्रित किया गया है -

1. अधिकांश छात्र पाठ्यचर्या मानकों (से नीचे है, जिनका औसत ग्रेड 6 छात्र 2.5 वर्ष पीछे हैं।

2. सीखने की प्रगति की औसत दर पाठ्यचर्या मानकों द्वारा बहुत अधिक सपाट है। जिसके परिणामस्वरूप उच्च ग्रेड में सीखने के अंतराल में वृद्धि हुई है।

3. एक ही कक्षा के छात्रों के सीखने के स्तर में भारी भिन्नता है, जो सभी ग्रेडों में पाँच से छह ग्रेड स्तरों तक फैली हुई है।

यह आंकड़ा कई विशेषताओं को दर्शाता है जो भारतीय शिक्षा प्रणाली को समझने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह एक ऐसे पाठ्यक्रम का सुझाव देता है। जो उपलब्धि वितरण के शीर्ष लक्ष्य को लक्षित करता है और छात्रों के वास्तविक उपलब्धि स्तर की तुलना में बहुत तेजी से आगे बढ़ता है।

(मुरलीधरन, सिंह) के अनुसार कक्षा-8 तक ग्रेड का निर्धारण, कानून द्वारा निषिद्ध कर दिया गया है। जिससे अधिकांश छात्रों को अकादमिक स्तर पर तैयार होने का मौका ही नहीं मिल पाता। यह स्थिति लगभग सभी विकासशील देशों में बन गई है।

यह आंकड़ा यह भी बताने में सहायता करता है कि शिक्षकों के वेतन और स्कूल के बुनियादी ढ़ांचे और अन्य वस्तुओं पर बढ़ा हुआ व्यय सीखने पर कम प्रभाव कैसे डाल सकता है। छात्र पाठ्यक्रम से पीछे रह गये है। जिसमें शिक्षकों का हस्तक्षेप पाठ्यक्रम को पूरा करने में छात्रों की मदद कर सकता है। (मुरलीधरन, सिंह और गनीमियन-2017)

यह आंकड़ा भारतीय शिक्षा की असमानता को भी दर्शाता है। लेकिन यदि वास्तविक आंकड़ा देखा जाय तो यह असमानता और भी अधिक हो सकती हैं। क्योंकि इस आंकड़े से निजी स्कूलों में छात्रों की संख्या का पता नहीं चलता। इसका अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण मूल्यांकन भी किया गया, जिसमें भारतीय राज्यों के डेटा की तुलना अन्य देशों से भी की गयी और यह पाया गया कि, भारत में सीखने की असमानता दक्षिण अफ्रीका के बाद दूसरे स्थान पर थी। (दास और जाजोनक-2010)

इसके बाद भी शैक्षणिक स्तर पर भारतीय छात्र अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा में आते है और विश्वप्रसिद्ध सफलता प्राप्त करते हैं, लेकिन अधिकांश भारतीय बच्चे अपनी स्कूली शिक्षा के अंत में बुनियादी कौशल भी हासिल नहीं कर पाते।

भारतीय शिक्षा प्रणाली को समझने के लिए यह पहचानना जरूरी है कि शिक्षा प्रणालियों ने अपने दो उद्देश्यों को पूर्ण रूप से पूरा कर लिया है।

1. ज्ञान और कौशल प्रदान करना।

2. मूल्यांकन, वर्गीकरण और चयन करना।

इससे भारतीय शिक्षा प्रणाली में वर्गीकरण और चयन के रूप में बहुत लाभदायक सिद्ध होती है।

नीति में अनुसंधान:-

2020 में जारी की गयी एन ई पी ने कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर विशेष प्रकाश डाला है -

1. एन ई पी में सबसे महत्वपूर्ण बात यह बतायी गयी है कि, 'सीखना' सबसे अधिक महत्वपूर्ण है जो सार्वभौमिक आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता को बहुत महत्व प्रदान करती है।

यह शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ा देती है। इस प्रकार से **NEP** शिक्षा के महत्व को पहचान पाता है।

2. दूसरी महत्वपूर्ण बात **NEP** के अनुसार शिक्षकों के कौशल में सुधार करके, उनकी आवश्यक मांगों को पूर्ण किया जाय तथा शिक्षकों के प्रभाव को मजबूत किया जाय, विशेष रूप से **NEP** ''कार्यकाल पदोन्नति और संरचना की एक मजबूत योग्यता-आधारित संरचना'' की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है। ये उत्कृष्ट शिक्षकों को प्रोत्साहित और मान्यता देता है। **NEP-2020** यह बताता है कि

''शिक्षक वास्तव में हमारे बच्चों के भविष्य को आकार देते हैं और इसलिए हमारे राष्ट्र के भविष्य को, जिसका अर्थ है कि शिक्षक अपनी कक्षाओं में उच्च गुणवत्ता वाले मानव संसाधन का निर्माण करके राष्ट्र निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण है।

3. तीसरी महत्वपूर्ण बात यह हो सकती है कि, स्कूलों में सुधार के लिए स्कूल के प्रबंधन और संगठन में सुधार किया जाय, 1990 से ही, बड़े पैमाने पर हर बस्ती में एक स्कूल उपलब्ध कराकर सार्वभौमिक स्कूल पहुँचने की नीति को बढ़ावा दिया गया। 2016 तक 417,000 से अधिक सरकारी प्राथमिक स्कूलों में कक्षा 1 से 5 तक 50 से कम छात्र थे। (किगडन-2020)

इसी प्रकार छोटे और फैले हुए स्कूल प्रशासन तथा शिक्षकों को एक साथ कई कक्षाओं में छात्रों को पढ़ाने की आवश्यकता के कारण पुस्तकालय और कम्प्यूटर प्रयोगशालाओं का बहुत छोटा होना भी शिक्षकों की प्रभावशीलता पर प्रभाव डालता है। इसलिए **NEP** बड़े स्कूलों पर अधिक निवेश करने की बात करता है और स्कूल प्रबंधन को भी बहुत अधिक महत्व देता है।

स्कूलों में सुधार की प्रक्रिया तेज करने के लिए स्कूल विकास योजनाओं की गति, तीव्र करने पर भी ध्यान देता है।

गाँवों में सड़कों पर भी ध्यान दिये जाने की बात करता है। जिससे आवागमन का साधन सुलभ हो सके, और बड़े पैमाने पर स्कूलों के लाभ बच्चों को मिल सकें।

चुनौतियाँ:-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति एक उपयोगी नीति है जो शोध और साक्ष्य पर आधारित है। लेकिन इसके लक्ष्यों को पूरा करने के लिए इसकी कार्ययोजना पर ध्यान देने तथा उसे पूरा करने की बहुत अधिक आवश्यकता है।

उदाहरण के लिए मध्यप्रदेश राज्य के कुछ छात्रों पर सीखने के परिणामों को सटीक रूप से मापा गया। जो बहुत चुनौतीपूर्ण था। जिसमें कक्षा-1 से 8 तक के सभी सरकारी स्कूलों के बच्चों के लिए एक वार्षिक राज्य स्तरीय मूल्यांकन किया जाता है, जिसे ''राष्ट्रीय सर्वोत्तम अभ्यास'' घोषित किया जाता है। जिसमें **NEP** कक्षा 3, 5 और 8 के सभी स्कूलों के छात्रों के लिए एक समान मूल्यांकन की सिफारिश करता है।

फिर भी, एक स्वतंत्र मूल्यांकन किया गया, जिसमें अधिकारिक परीक्षणों के कुछ सप्ताह बाद ही उन्हीं छात्रों को वही प्रश्न दिए गए, जिसमें से छात्रों के एक बड़े हिस्से के पास बुनियादी कौशल नहीं था, जबकि इन्हीं छात्रों की उपलब्धि को बहुत बढ़ाचढ़ाकर बताया गया था। ऐसी चुनौतियों के कारण हम तीन प्रमुख सिद्धांतों पर प्रकाश डालते हैं जो सफलता की संभावना को बढ़ा सकते है।

पहला सिद्धांत है मापन, जो सार्वभौमिक नामांकन प्राप्त करने में भारत की सफलता दर्शाती है यह प्रणाली अच्छी तरह से परिभाषित लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम है जिन्हें आसानी से मापा जा सकता है।

दूसरा मुख्य सिद्धांत नीति और कार्यक्रम प्रभावशीलता का निरंतर मूल्यांकन है। शोध से यह पाया गया कि शिक्षा में सुधार के लिए शिक्षकों का वेतन बढ़ाना, स्कूल अनुदान प्रदान करना, मुफ्त पाठ्यपुस्तकें देना आदि सीखने के परिणामों पर अधिक प्रभाव नहीं डाल पाता। जबकि अन्य प्रयोग जैसे (सही स्तर पर शिक्षण) अत्यधिक प्रभावी हो सकते है।

तीसरा मुख्य सिद्धांत लागत प्रभावशीलता का है। विभिन्न साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि लागत प्रभावशीलता में स्पष्ट भिन्नता पायी जाती है। जिसमें कई मंहगी नीतियों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है और सस्ती नीतियाँ बहुत प्रभावी होती है। सीमित संसाधनों और उन पर प्रतिस्पर्धी मांगों को देखते हुए लागत-प्रभावशीलता न केवल एक आर्थिक विचार है, बल्कि एक नैतिक विचार भी है। इसके अतिरिक्त कोविड-19 के कारण भारत और दुनिया भर में शिक्षा व्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हुई है, भारत में सभी सरकारी स्कूल बंद हो गये, जिससे शिक्षा व्यवस्था पर बहुत बड़ा खतरा उत्पन्न हो गया।

शिक्षा का संकट और भी बदतर हो गया।

निष्कर्ष:-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सुधार के लिए सभी विचारों, हितों, संस्थाओं के एक साथ कार्य करने पर विचार करना होगा। अभी तक NEP का लक्ष्य केवल अपनी नीतियों के सुधार पर अधिक केन्द्रित रहा है और इसमें पर्याप्त सुधार संभव भी है। विशेष रूप से सभी बच्चों के सीखने के परिणामों को नियमित मापा जाना तथा उसकी रिपोर्टिंग देने की प्रतिबद्धता NEP के महत्वपूर्ण नीतियों में सम्मिलित है। जैसा कि NEP द्वारा अर्ह स्वतंत्र राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी की स्थापना में परिकल्पित किया गया है।

यदि माता-पिता को सीधे ऐसी जानकारी प्रदान की जाए जो अत्यंत सुलभ प्रारूपों में उपलब्ध हो, तो सार्वजनिक और निजी दोनों स्कूलों में सुधार को उत्प्रेरित कर सकता है।

भारत के जनसांख्यिकीय परिवर्तन को देखते हुए ऐसे सुधार विशेष रूप से जरूरी है। कई राज्यों में विशेष रूप से दक्षिण भारत में कुल प्रजनन दर पहले ही प्रतिस्थापन स्तरों के नीचे हैं, जिससे प्राथमिक विद्यालयों का समूह का आकार छोटा होता जा रहा है। इस प्रकार देश का अधिकांश हिस्सा सीखने का संकट को हल किए बिना ही जनसांख्यिकीय लाभांश की ऊँचाइयों को पार कर चुका है। लेकिन उत्तर प्रदेश तथा बिहार जैसे उत्तरी भारत के कुछ कुछ बड़े हिस्सों में अभी भी उम्मीद बची हुई है। लेकिन एक अच्छी बात यह है कि आने वाले वर्षों में समूह के आकार में कमी आने से प्रति छात्र संसाधन बढ़ सकते हैं, जिससे लागत प्रभावी निवेश के लिए राजकोषीय स्थान खाली हो सकता है।

हमारे भारतीय स्कूलों में कम सीखने के स्तर के बारे में कुछ भी अपरिहार्य नहीं है। वियतनाम जैसे अन्य विकासशील देश प्रति व्यक्ति आय के बहुत ही समान स्तरों पर काफी बेहतर सीखने के परिणाम प्राप्त करने में सक्षम रहे हैं।

अन्त में हम कह सकते हैं कि एन ई पी भारतीय शिक्षा को ''चुनाव और चयन'' से 'मानव विकास' की ओर ले जाने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है, जिससे प्रत्येक छात्र अपनी अधिकतम क्षमता तक विकसित हो सके। यदि इस दृष्टिकोण को व्यवहार में साकार किया जाता है तो भारत और दुनिया बेहतर स्थिति में होगी।

REFERENCES

1. Muralidharan, K. Das, J, Holla, A, and Mohpal, A, 2017. The fiscal cost of week Governance: Evidence from Teacher Absence in India.

2. Banerjee, A, Baneji R, Berry, J. Duflo, E, Kannan H, Mukerji, S, shotland, M. and Walton, M, 2017 from Proof of Concept to scalable policies.

3. Kingdom, G.G. 2020, The private Schooling Phenonnenon in India A Review. The Journal of Development studies. vol.56, issue 10,PP.

4. Pratham. 2019, Annual status of education Report 2018, New Delhi.